6

शुकसप्तति

ध्यान दें:

पुत्र यदि विपरीत रास्ते पर जाता है तो क्या पिता उसे छोड़ देता है। नहीं, किन्तु उसे समझाता है और सन्मार्ग पर प्रवृत्त करता है। इसी प्रकार शुकसप्तति में मदनविनोद जब व्यापार के लिए अन्यदेश को गया तब नीति उपदेशों के द्वारा काम का हनन और प्रभावती के चरित्र की रक्षा जैसे हो वैसी कथा को सुनाया। पंचतन्त्र में राजा का पुत्र आलसी, भोगों में आसक्त और मूर्ख था। विष्णु शर्मा नामक विद्वान ने कथा के द्वारा उसे उपदेश दिया और उससे वह ज्ञानी हुआ। इस पाठ में शुकसप्तति इस पुस्तक से कथा ली गई है। शुकसप्तति में शुक प्रभावती को अनैतिक कर्मों से रोकने के लिए कथा के माध्यम से नीति उपदेशों को देता था।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे:

- कथा में वर्णित नीति वाक्यों का ज्ञान प्राप्त कर पाने में;
- संस्कृत वाङ्मय में कथा कैसे आनन्द को उत्पन्न करती हैं उसका बोध कर पाने में;
- नैतिक शिक्षा और व्यवहारिक शिक्षा को प्राप्त कर पाने में;
- संस्कृत में स्वयं कथा को लिख सकने में;

6.1) प्रथम कथा- सुदर्शन की बुद्धि

6.1.1) कथामुख

किसी नगर में प्रसिद्ध व्यापारी हरिदत्त के मदनविनोद नामक पुत्र था। और वह पुत्र दुष्ट था। ऐसे कुमार्गगामी पुत्र को देखकर पिता को दु:ख हुआ। दु:खी व्यापारी को देखकर उसका मित्र त्रिविक्रम नामक ब्राह्मण अपने घर को गया। और आकर नीति में निपुण शुक सारिका को लेकर पुन: उनके घर गया। और वहाँ जाकर कहा मित्र इस सपत्नीक शुक का तुम्हें पुत्र के समान पालन करना चाहिए। इसका संरक्षण करने से तुम्हारा दु:ख दूर हो जाएगा। हरिदत्त ने उसे अपने दुष्ट पुत्र को सौंप दिया। मदनविनोद उसका

ध्यान दें:

उचित रूप से पालन करता था। शुक के उपदेश से कुमार्गगामी दुष्ट पुत्र माता-पिता के प्रति अच्छा और विनीत हुआ। इसके बाद पिता को नमस्कार करके उनकी आज्ञा को लेकर और पत्नी को पूछकर व्यापार के लिए नौका से अन्य देश को गया। उसके जाने से पत्नी प्रभावती ने शोकाकुल होकर कुछ दिन व्यतीत किए। व्यभिचारिणी स्त्रियों द्वारा समझाया गया कि पति की अनुपस्थिति में परपुरुष गमन करें। उसकी भी इस विषय में अभिलाषा हुई। जब भी वह परपुरुष के पास जाने के लिए होती थी तब ही शुक कहता था मत जाओ। चतुर शुक कहता था तुम उस जैसा कुकर्म करने योग्य हो परन्तु प्रतिकूल अवस्था में अपनी रक्षा के लिए तुम्हें बुद्धि की आवश्यकता है। प्रतिकूल अवस्था में दुष्ट उपहास ही करते हैं। इस प्रकार सुनकर प्रभावती मदनविनोद की पत्नी की उत्सुकता चली गई। उस शुक ने परपुरुष संगम से रक्षा के लिए मनोरंजक कथा कही। कथा के मध्य में इस विपत्ति में किस प्रकार का आचरण करना चाहिए इत्यादि प्रश्न भी पूछता था। उन्हीं कथाओं का संग्रह शुकसप्तति है। इस प्रकार शुक ने उसके शील की रक्षा की। अन्त में मदनविनोद विदेश से आया। फिर उसने पत्नी के साथ सुख से समय व्यतीत किया इस प्रकार ग्रन्थ की समाप्ति होती है।

6.1.2) पूर्वपीठिका

अस्ति चन्द्रपुरं नाम नगरम्। वाणिज्यार्थं सारिकाप्रेषिते मदनविनोदनाम्नि वणिजि तत्पत्नी प्रभावती सम्प्राप्तमधुकाले अनलबाणाहता सती स्वैरिणीभिः सखीभिः प्रतिबोधिता यदा पुरुषान्तराभिलाषिणी संजाता तदा तत् क्षमयितुम् अपि च तस्याः पातिव्रत्यं रक्षितुं शुकः उक्तवान्-

6.1.3) प्रथम कथा-सुदर्शन की बुद्धि-मूलपाठ-विभाग-1

शुकः-

गच्छ देवि किमाश्चर्यं यत्र ते रमते मनः।

नृपवद्यदि जानासि परित्राणं त्वमात्मनः।।

प्रभावती पृच्छति-कथमेतत्।

शुक- कथयति-अस्ति विशाला नगरी। तत्र सुदर्शनो राजा। तत्र च विमलो नाम वणिक्। तस्य च पत्नीद्वयं सुभगं रूपसम्पन्नं दृष्टवा कुटिलनामा धूर्तस्तद्भार्याद्वयग्रहणेच्छया अम्बिकां देवीमाराध्य विमलरूपं ययाचे। लब्ध्वा च तत्प्रकृतिं विमले बहिर्गते तद्गृहं गत्वा प्रभुत्वं चकार। प्रसाधनदानैर्वशीकृतोऽखिलोऽपि परिजनवर्गः। तार्याद्वयं बहुमानदानादिना सन्तोष्य स्वेच्छया भुङ्क्ते। विमलोऽयं धनाद्यनित्यतां श्रुत्वा दाता बभूवेति परिजनोऽनवरतं चिन्तयति।

व्याख्या- चन्द्रपुर नाम का कोई नगर था। वहाँ सारिका द्वारा व्यापार के लिए गये मदनविनोद की पत्नी को जो व्यभिचारिणी सखियों द्वारा बताने पर परपुरुष के संगम के लिए अभिलाषी हुई रोका गया। तब प्रभावती के पातिव्रत्य और सतीत्व की रक्षा के लिए शुक ने कहा-

अन्वयः-देवि यदि त्वम् नृपवत् आत्मनः परित्राणम् जानासि यत्र ते मनः रमते गच्छ। किम् आर्य्यम्।

अन्वयार्थः- हे देवी प्रभावती यदि तुम राजा के समान अपने परित्राण की रक्षा करनी जानती हो जिस पुरुष में तुम्हारा मन रमता है उसके पास जाओ। इस विषय में क्या आश्चर्य है। कोई आश्चर्य नहीं हैं, जिसका मन जहाँ रमता है वह वहाँ ही जाए।

तात्पर्यार्थः- शुक के द्वारा प्रभावती को रोकने पर भी परपुरुष के पास जाती हुई उस प्रभावती

ध्यान दें:

को कहता है कि परपुरुष के लिए जाती हो तो कोई भी आश्चर्य नहीं होता क्योंकि जो जिसकी इच्छा करता है वह वहाँ जाता है, इसलिए हे देवी तुम भी जा सकती हो किन्तु देवी तुम विपत्ति में राजा के समान रक्षा करना जानती हो तो जाओ, नहीं तो बड़ा क्लेश उत्पन्न होगा।

प्रभावती ने पूछा कैसे कहो अर्थात् राजा ने कैसे अपनी रक्षा की- विशाला नगरी है। वहाँ सुदर्शन नाम का कोई राजा था। और उस नगरी में विमल नामक कोई बनिया था। और उस व्यापारी की दो रूप सम्पन्न पत्नियों को देखकर कुटिल नामक एक मूर्ख ने उसकी दोनों पत्नियों को प्राप्त करने की इच्छा से अम्बिका देवी की आराधना कर विमल का रूप मांगा। उसका आकार प्रकार प्राप्त करके विमल के बाहर जाने पर उसके घर जाकर अपना आधिपत्य जमा लिया। उसने पुरस्कार रूप में धन प्रदान कर समस्त भृत्य वर्ग को अपने अधीन कर लिया। उसकी दोनों पत्नियों को अत्यन्त सम्मान दान आदि से सन्तुष्ट कर उनका सम्भोग करता है। भृत्यवर्ग यह विमल धनादि की अनित्यता सुनकर दानी हो गया-ऐसा निरन्तर सोचता है।

सरलार्थः- चन्द्रपुर नगर का व्यापारी मदनविनोद व्यापार के लिए विदेश गया उसकी पत्नी प्रभावती कामातुर हुई। फिर उसकी सखियों के द्वारा समझाने पर उसकी परपुरुष के साथ रमण की इच्छा हुई। किन्तु शुक ने उसे रोका और कहता है कि-

यदि वह राजा के समान अपनी रक्षा कर सकती है, तब वह परपुरुष के लिए जाने योग्य है। तब उस प्रभावती ने राजा ने कैसे रक्षा की ऐसा पूछा। तब शुक ने कहा कि विशाला एक नगरी थी। वहाँ सुदर्शन नाम का राजा था। वहाँ एक बनिया रहता था, जिसका नाम विमल था। उसके दो भार्या थी-रुक्मिणी और सुन्दरी। वहाँ ही नगर में एक धूर्त था। उसका नाम कुटिल था। देवी अम्बिका की अराधना करके उसे विमल के समान आकृति प्राप्त हुई। फिर जब विमल बाहर गया तब वह धूर्त घर के अन्दर आया। उसने धन देकर सेवकों को अपने अधीन किया। दोनों भार्या ने उसे अपने पति के रूप में स्वीकार किया। उसने सभी को धनादि से सन्तुष्ट किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- पुरषान्तराभिलाषिणी - पुरुषान्तरस्य पतिभिन्नस्य अभिलाषिणी अभिलाषवती इति, षष्ठी तत्पुरुष समास।
- प्रसादधनदानैः - प्रसादेन अनुग्रहेण धनस्य दानैः पुरस्काररूपेण धनं दत्त्वा।
- परिजनवर्गः - भृत्यसमुदायः।
- ययाचे - याचृ याच्ञायाम् धातु, लिट् लकार, प्रथमपुरुष एकवचन।
- चकार - डुकृञ् करणे इति, धातु लिट् लकार, प्रथमपुरुष एकवचन।

6.1.4) प्रथमकथा-सुदर्शन की बुद्धि-मूलपाठ-विभाग-2

अथ सत्यविमलोऽपि द्वारमागतः कुटिलाज्ञया द्वारपालेन निषिद्धः। ततो बहिस्थः फूत्करोति ''वंचितोऽहं धूर्तराजेन''। तस्य चौवं क्रन्दतो गोत्रजा जनाः कौतुकाच्च मिलिताः। तत्क्षणात् हट्टानि मुक्त्वा वणिक्सार्थो मिलित्वा आरक्षकमन्त्रिमुख्यानां पुरतः फूच्चक्रे। 'राजन् वंचितोऽस्मि धूर्तराजेन'। ततो राजा तदवलोकनाय प्रहिताः पुरुषाः। तेनापि ते द्रव्यादिदानेन सानुकूलाः कृताः। तं धनमायकं गृहे दृष्ट्वा जनो वदति-'स्वामिन् विमलो गृहे विद्यते। अयंच धूर्तराट् द्वारस्थः'। ततो नृपेण द्वावप्येकत्र कृतौ। ततो द्वयोर्मध्यान्न कोऽपि धूर्तेतरयोर्व्यक्तिं जानाति। जातः कोलाहलोऽखिललोकव्यवहार-नाशकरो राज्ञष्चापवादः। यतो राज्ञां दुष्टनिग्रहः

ध्यान दें:

शिष्टपालनंच स्वर्गाय।

व्याख्या- इसके बाद वास्तविक विमल भी अर्थात् जो वस्तुतः विमल है वह भी घर के द्वार पर आया तो कुटिल की आज्ञा से द्वारपाल ने उसे रोक दिया। फिर वह बाहर खड़ा चिल्लाता है। और उसके इस प्रकार चिल्लाते हुए उसके कुल गोत्र वाले कौतुक वश मिले। उसी समय बाजार छोड़कर व्यापारी वर्ग मिलकर नगरपालों तथा मुख्यमन्त्री के सामने चिल्लाने लगे- राजा, धूर्त कुटिल के द्वारा मैं ठगा गया हूँ।

तब राजा ने उसे देखने के लिए आदमी भेजे। उस धूर्त ने उन्हें भी धन देकर अपने अनुकूल कर लिया। उस धन देने वाले को घर में देखकर राजपुरुष ने कहा- स्वामी विमल तो घर में है। यह द्वार पर स्थित व्यक्ति धूर्त है।

तब राजा ने दोनों को एकत्र किया। दोनों में से कौन धूर्त है और कौन वास्तविक विमल कोई नहीं जानता। ऐसा कोलाहल हुआ कि सबका कार्य रूका ओर राजा की लोकनिन्दा हुई। क्योंकि दुष्टों का दमन करना तथा शिष्टता का पालन करना राजा का धर्म है। अर्थात् शिष्टता के पालन से और दुष्टों के दमन से राजा को स्वर्ग प्राप्त होता है।

सरलार्थः- फिर जब वास्तविक विमल आया तब सभी ने उसे ठग के रूप में स्वीकार किया। वह विमल कुल गोत्र वालों को लेकर राजा के पास गया। तब राजा ने राजपुरुष को वृत्तान्त जानने के लिए भेजा परन्तु वह भी धूर्त के धन से मोहित हुए। और राजा को कहा सत्य विमल धूर्त है। तब राजा ने दोनों को बुलाया। परन्तु दोनों की समान आकृति है इस कारण कौन वास्तविक है राजा नहीं जान सका। इस प्रकार क्रम से लोक व्यवहार नाशक कोलाहल हुआ। और राजा की हर जगह ही निंदा सुनते थे। क्योंकि राजा का कार्य दुष्टों का दमन और शिष्टता का पालन है। वैसा करने से राजा को स्वर्ग प्राप्त होता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- फूत्करोति- चीत्कारं करोति।
- गोत्रजाः - समाने गोत्रे जायन्ते इति गोत्रजाः कुलोत्पन्नाः।
- वणिक्सार्थः- वणिजां सार्थः समुदायः वणिक्सार्थः।
- धूर्ततरयोः- इतरेतरद्वन्द्वसमास।
- अखिललोकव्यवहारनाशकरः - षष्ठी तत्पुरुष समास।
- दुष्टदमनम्- षष्ठी तत्पुरुषसमास।
- शिष्टपालनम् - षष्ठी तत्पुरुषसमास।

6.1.5) प्रथमकथा-सुदर्शन की बुद्धि-मूलपाठ-विभाग-3

उक्तंच-

प्रजापीडनसन्तापात्समुत्तो हुताशनः।
राज्ञः कुलं श्रियं प्राणान्नादग्ध्वा विनिवर्त्तते॥
ततो राजा एकान्ते तयोर्निर्णयमचिन्तयत् तत्कथय कथं निश्चयः स्यादिति प्रश्नः।

व्याख्या

ध्यान दें:

फिर राजा स्वय इसके समाधान में प्रवृत्त हुए। कहते भी है-

अन्वय:

प्रजापीड़नसन्तापात्समुद्भूत: हुताशन:
राज्ञ: कुलम् श्रियम् प्राणान् अदग्ध्वा विनिवर्तते।

अन्वयार्थ:- प्रजापीड़नरूप उष्णता से जो अग्नि उत्पन्न होती है वह राजा के कुल, सम्पत्ति और प्राणों को बिना भस्म किए शान्त नहीं होती है।

सरलार्थ:- श्लोक का यह भाव है- राज के द्वारा प्रजा का यदि उत्पीड़न होता है तो उससे प्रजा क्रोधित होती है। उस क्रोधाग्नि में राजा का कुल, धन तथा उसके प्राणों का भी नाश होता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- प्रजापीड़नसन्तापात् - प्रजानाम् पीड़नम् तद्रूपसन्ताप: उष्णता तस्मात्।

6.1.6) प्रथम कथा-सुदर्शन की बुद्धि-मूलपाठ-विभाग-4

शुक:- स राजा लब्धोपायस्तद्विमलभार्याद्वयं पृथक्पृथक्संस्थाप्य पृष्टवान्- किं युवयो: पाणिग्रहणे भर्त्रा विभूषणं प्रदत्तं धनंच। पश्चात्किं जल्पितं प्रथमसंगे च का वार्त्ता भर्त्रा सहाभूत्। का माता कश्च पिता। किं कुलम्, का जाति:। इत्येवं पृष्टाभ्यां यथालब्धं यथावृत्तं यथाप्रोक्तं यथासुप्तं सर्वं ताभ्यां कथितम्। पश्चात्तु तौ पुरुषौ पृष्टौ परस्परं विसंवदन्तौ। ततो भार्याद्वयस्य रुक्मिणीसुन्दरीनामधेयस्य य: संवादं वदति स सत्य:। इतरस्तु धूर्तो राज्ञा निर्वासित:। सत्यस्तु राज्ञा सभार्य: संस्कृत: स्वगृहं गत:। इति महाराजबुद्धि:।

व्याख्या- शुक कहता है- उस राजा को उपाय सूझा उसने विमल की दोनों पत्नियों से अलग अलग पूछा-तुम दोनों को विवाह के समय पति ने क्या आभूषण और धन दिया। विवाह के पश्चात् पति के साथ क्या बातचीत हुई। कौन माता और कौन पिता है। कुल वंश क्या है। जाति क्या है। इस प्रकार पूछने पर उन दोनों को जो प्राप्त हुआ वैसा, जैसा भी घटित हुआ वैसा कह दिया। जिस प्रकार सोए सब बता दिया। इसके बाद राजा ने वही बातें परस्पर विवाद करते हुए उन दोनों पुरुषों से पूछी। तब दोनों पत्नियों के संवाद को जिसने कहा वही सच्चा है। दूसरे धूर्त विमल को राजा ने बाहर निकाल दिया। सच्चा विमल पत्नी के साथ सत्कृत हो अपने घर गया।

सरलार्थ:- उसने क्या किया शुक उत्तर देता है- तब राजा ने उसकी दोनों पत्नी को अलग-अलग बैठाकर पूछा कि तुम्हें विवाह के समय पति ने क्या आभूषण दिया, विवाह के बाद प्रथम दिन क्या बात हुई। माता-पिता का नाम क्या है। कुल, जाति इत्यादि का नाम क्या है। फिर वही राजा ने उन दोनों पुरुषों से पूछा। भार्या के समान जिसके उत्तर थे वह ही वास्तविक विमल है ऐसा निश्चय हुआ। जो उत्तर नहीं दे पाया वह धूर्त विमल है। इसके बाद वास्तविक विमल अपनी पत्नियों के साथ राजा के द्वारा सत्कृत हो अपने घर को गया। और धूर्त विमल को राजा ने निर्वासित किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- लब्धोपाय: - लब्ध: प्राप्त: उपाय: येन स:।
- महाराजबुद्धि:- षष्ठीतत्पुरुष समास।

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्न-1

1. अनंग की गति किस प्रकार की है?
2. शुक ने किसके प्रति कथा को कहा?
3. नगर का क्या नाम है?
4. विशाला नगरी के राजा का नाम क्या है?
5. बनिए का नाम क्या है?
6. बनिए की पत्नियों का नाम क्या है?
7. धूर्त का नाम क्या है?
8. धूर्त ने किस देवी की पूजा करके वर को प्राप्त किया?
9. किस प्रकार की अग्नि राजा के कुल को जलाती है?
10. राजा दुष्टता का नाश और शिष्टता का पालन किसके निमित्त करता है?
11. सुदर्शन नामक राजा की राजधानी.....।
12. विमल की दो पत्नी..... .....है?
13. .....नामक धूर्त ने अम्बिका देवी की आराधना कर विमल रूप की याचना की?
14. धूर्त ने दोनों भार्याओं को किस प्रकार से सन्तुष्ट किया।

    1. भय से
    2. प्रेम से
    3. बहुत मान दानादि से
    4. क्रूर स्वर से

15. .....उत्पन्न अग्नि राजा के कुल को जला देती है?
16. राजा का शिष्ट पालन किसलिए है?

6.2) द्वितीय कथा- विषकन्या की कथा

भूमिका

जगत में जो गुरुजनों के उपदेश को नहीं सुनते हैं, वे अपने मत का अवलम्बन कर दूसरे के मत का अनादर करके अपने जीवन का निर्वाह करते हैं। उससे उनकी बड़ी दुर्गति होती है। शुकसप्तति में एक कथा में ब्राह्मण ने गुरु की आज्ञा का उल्लंघन कर विषकन्या के साथ विवाह किया। उससे उसको बहुत दु:ख हुआ। वह कथा ही यहाँ प्रस्तुत की गई है।

6.2.1 द्वितीय कथा- विषकन्या की कथा-मूलपाठ-विभाग-1

शुक:- मां कृतावज्ञं कृत्वा मा गच्छ। यतो बालकादपि हितं वाक्यं ग्राह्यम्।

कृतावज्ञ: पुरा देवि वृद्धवाक्यपराङ्मुख:।

ध्यान दें:

पतितो ब्राह्मणोऽनर्थे विषकन्याविवाहने॥1॥

प्रभावती पृच्छति- कथमेतत्।

शुकः- अस्ति सोमप्रभं नाम द्विजस्थानम्। तत्र विद्वान्धार्मिकः सोमशर्मा नाम विप्रः। तत्पुत्री रूपौदार्यगुणोपेता विषकन्येति विज्ञाताभूत्। तेन तां भयेन कोऽपि न विवाहयति। ततः सोमशर्मा वरार्थं भुवं पर्यटन् सम्प्राप्तो द्विजस्थानं जनस्थानं नाम। तत्र गोविन्दनामा ब्राह्मणों जड़ो निर्धनश्च। तस्मै कन्या प्रदत्ता। तेन सुहृदां निवारयतामपि कृतावज्ञेनोढ़। सर्वरूपलावण्यगुणोपेता मोहिनी विषकन्या। सा विदग्धा गोविन्दस्तु मूर्खो लघुवयाश्च। ततश्च सा आत्मनो रूपलावण्ययौवनं शुशोच।

अविदग्धः पतिः स्त्रीणां, प्रौढ़ानां नायकोऽगुणी।
गुणिनां त्यागिनां स्तोको विभवश्चेति दुःखकृत्॥2॥

प्रावृट्समयप्रवासो यौवनदिवसे तथा च दारिद्र्यम्।
प्रथमस्नेहवियोगस्त्रीण्यपि गुरुकाणि दुःखानि॥3॥

अप्रस्तावे पठितं कण्ठविहीनंच गायनं गीतम्।
मा मा भणन्त्यां सुरतं त्रीण्यपि गुरुकाणि दुःखानि॥4॥

व्याख्या- शुक कहता है- मेरे वचनों को तिरस्कृत कर मत जाओ। क्योंकि बालक से भी हितवाक्य ग्रहण करना चाहिए।

अन्वय- देवि पुरा ब्राह्मणः विषकन्याविवाहने वृद्धवाक्यपराङ्मुखः कृतावज्ञः अनर्थे पतितः॥

अन्वयार्थः- हे देवी! प्राचीनकाल में ब्राह्मण विषकन्या के साथ, वृद्धों के वचनों का तिरस्कार कर, उनकी अवज्ञा कर विवाह करके घोर संकट में पड़ गया।

तात्पर्यार्थः- देवी सुनो प्राचीन काल में विषकन्या के विवाह के प्रसंग में वृद्धों के वाक्य को न सुनकर और उनकी अवज्ञा करके ब्राह्मण बड़े संकट में पड़ गया।

व्याख्या- प्रभावती ने पूछा यह आख्यान कैसे है।

शुक कहता है- सोमप्रभ नामक ब्राह्मणों का स्थान है। वहाँ सोमप्रभ नामक स्थान में सोमशर्मा नामक एक विद्वान धार्मिक ब्राह्मण था। उसकी पुत्री रूप औदार्य से युक्त विषकन्या विख्यात थी। उससे भय के कारण कोई भी उससे विवाह नहीं करता था। तब सोमशर्मा वर की तलाश में पृथ्वी पर घूमते हुए जनस्थान नामक ब्राह्मणों की बस्ती में पहुँचा। वहाँ गोविन्द नामक मूर्ख और निर्धन ब्राह्मण था। उसे उसने कन्या दे दी। उसने रोकते हुए सुहृदजनों की भी अवज्ञा कर रूप लावण्यवती मोहिनी विषकन्या से विवाह कर लिया। वह कामकलाप्रवीण थी और गोविन्द मूर्ख एवं अल्पव्यस्क था। तब वह अपने रूप, लावण्य एवं यौवन पर शोक करने लगी।

अन्वय-

स्त्रीणाम् पतिः अविदग्धः प्रौढानाम् नायकः अगुणी।
त्यागिनाम् गुणिनाम् स्तोकः विभवः च इति दुःखकृत्॥

अन्वयार्थः- कामकला में निपुण पत्नी का मूर्ख पति अर्थात् काम कला से अनभिज्ञ, प्रौढ़ स्त्री का (अर्थात् काम कला के अभ्यास में पूर्णतः निपुण स्त्री का) मूर्ख नायक, त्यागी, दानशील गुणीजनों का अल्पधन ये तीनों दुःखदायी होते हैं।

तात्पर्यार्थः- कामकला में निपुण स्त्रियों का मूर्ख पति, कामकला अभ्यास में प्रौढ़ स्त्री का मूर्ख

पाठ-6

शुकसप्तति

ध्यान दें:

नायक, दानशील गुणीजन का अल्पधन ये तीनों दु:ख देते हैं।

अन्वय- प्रावृट्समयप्रवास: यौवनदिवसे दारिद्र्यम्, तथा च प्रथमस्नेनहवियोग: इति त्रीण्यपि गुरुकाणि दु:खानि।।

अन्वयार्थ:- वर्षाकाल में परदेश में रहना अर्थात् प्रिया से वियुक्त रहना, यौवनावस्था में दारिद्र्य धनाभाव के कारण मन की अभिलाषाएँ पूरी न हो पाये। प्रथम स्नेह करते ही प्रिय का वियोग ये तीनों अत्यन्त दु:खदायी हैं।

तात्पर्यार्थ:- वर्षाकाल में विदेश गमन, यौवन में धनाभाव, प्रथम स्नेह में प्रिया का वियोग ये तीन अत्यन्त दु:खकारी है।

अन्वय- अप्रस्तावे पठितम् कण्ठविहीनं गीतं गायनम् मा मा इति भणन्त्याम् सुरतम् इति त्रीण्यपि गुरुकाणि दु:खानि।।

अन्वयार्थ:- अवसर के विपरीत काव्य पढ़ना, स्वरमाधुर्यरहित गाया गीत, नहीं-नहीं कहती स्त्री का सम्भोग, ये तीनों महान दु:ख है।

तात्पर्यार्थ:- अनवसर पर काव्य पढ़ना, स्वर माधुर्य से रहित गीत का गायन, नहीं-नहीं स्त्री का सम्भोग ये तीनों भी महान दु:खकारी है।

सरलार्थ:- यहाँ आदि में शुक कहता है कि किसी की भी अवज्ञा नहीं करनी चाहिए। बालक यदि हित वाक्य को कहता है, तो उसका भी वाक्य स्वीकार्य होता है। कथामुख के द्वारा उसे आशय को कहना ही आरम्भ किया। शुक ने कहा कि पहले सोमप्रभ नामक प्रसिद्ध ब्राह्मणों का स्थान था। वहाँ कोई ब्राह्मण था। उसका नाम था सोमशर्मा। उसकी कन्या रूपलावण्यवती थी। वह विषकन्या नाम से विख्यात हुई। इसलिए कोई भी उससे विवाह की इच्छा नहीं करता था। उस सोमशर्मा ने बहुत खोज करके जनस्थान नामक द्विजस्थान को प्राप्त किया। वहाँ कोई मूर्ख और निर्धन ब्राह्मण था। उसका नाम गोविन्द था। उसके सभी बन्धुओं ने विवाह के लिए अनुमति नहीं दी, परन्तु उसके रूप से मोहित होकर उस गोविन्द ने उससे विवाह किया। वह मोहिनी नाम की विषकन्या रूपसम्पन्न कामकला में निपुण थी। गोविन्द तो मूर्ख और कनिष्ठ था। इसलिए उसको दु:ख हुआ। यह प्रसिद्ध है कि किसी भी मूर्ख की पत्नी यदि कामकला में निपुण होती है तो उसको दु:ख होता है। पुन: यदि कोई भी नायिका रूपगुणसम्पन्न और गुणवती होगी तब नायक यदि गुणहीन होगा तो उसको बहुत दु:ख होगा। और यदि किसी भी दानशील के पास में अल्प धन होता है तो उसका दानशीलत्व उसको दु:ख देता है। जब काव्य पठन का समय नहीं होता तब काव्यपठन पुन: स्वर माधुर्यादि के बिना ही गीतगायन और सम्भोग करने के लिए जिस नारी की इच्छा नहीं है उसके साथ सम्भोग दु:खकारी होता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- द्विजस्थानम् - षष्ठी तत्पुरुष समास।
- रूपौदार्यगुणोपेता - रूपेण औदार्यादिगुणैश्च उपेता युक्ता।
- विज्ञाता - विख्याता
- विदग्धा - कामकलानिपुणा।
- निर्धन: - नास्ति धनम् यस्य स: निर्धन: इति बहुव्रीहिसमास।
- कृतावज्ञेन- बहुव्रीहिसमास।

ध्यान दें:

6.2.2) द्वितीय कथा- विषकन्या की कथा-मूलपाठ-विभाग-2

सान्यदा गोविन्दं पतिमित्यब्रवीत् -''मम पितुर्गेहात्समागताया बहूनि दिनानि संजातानि। ततोऽहं त्वयैव सह गमिष्ये नान्यथा।'' ततः शकटं मार्गयित्वा सभार्यकः स चलितः। यावत्प्रयाति तावत्पथि एको युवा वाग्मी सुरुपः शूरश्च विष्णुनामा ब्राह्मणो मिलितः। तस्य ब्राह्मणस्य तस्याश्चान्योन्यमनुरागः संजातः। उक्तंच-

प्रीतिः स्याद्दर्शनाद्यैः प्रथममथ मनः संगसंकल्पभावो।
निद्राछेदस्तनूत्वं वपुषि कलुषता चेन्द्रियाणां निवृत्तिः॥
ह्रीनाशोन्मादमूर्च्छामरणमिति जगद्यात्यवस्था दशैताः।
लग्नैर्यत्पुष्पबाणैः स जयति मदनः सन्निरस्तान्यधन्वी॥५॥

व्याख्या- वह किसी दिन अपने पति गोविन्द से बोली- मुझे पिता के घर से आए बहुत दिन हो गए हैं। अतः मैं तुम्हारे साथ ही पिता के घर जाऊँगी अन्यथा नहीं।

फिर गोविन्द बैलगाड़ी तलाश कर भार्या के साथ चल दिया। जाते-जाते मार्ग में एक युवक, वक्ता, रूपवान और बलवान विष्णु नामक एक ब्राह्मण मिला। उस ब्राह्मण और विषकन्या का परस्पर अनुराग हो गया। कहा गया है-

अन्वय- सम्यक् निरस्तान्यधन्वी सन् सः मदनः कामदेवः जयति यत्पुष्पबाणैः प्रथमं दर्शनाद् यैः प्रीतिः स्यात् अथ अनन्तरम् मनः संकल्पभावः, निद्राच्छेदः, वपुषि तनुत्वं, इन्द्रियाणां च कलुषता, निवृत्तिः, ह्रीनाशोन्मादमूर्च्छामरणम् इति एताः दश अवस्थाः जगत् याति इति।

अन्वयार्थः- अन्य धनुर्धारियों को अपने सामने न ठहरने देने वाला वीर कामदेव सर्वोत्कृष्ट है जिसके पुष्पशरों के लगने से, प्रथम प्रिय के दर्शन आदि से अनुराग उत्पन्न होता है, तदनन्तर क्रमशः प्रिय से मिलने का मनोऽभिलाष, निद्रा भंग, शारीरिक दुर्बलता, अपने-अपने व्यापार में इन्द्रियों का आलस्य, प्रिय के अतिरिक्त अन्य विषयों में मन की विरक्ति, लज्जा का छूट जाना, उन्माद, मूर्छा और मरण इन दस दशाओं को सारा जगत प्राप्त होता है। अर्थात् सभी पूर्वोक्त दस अवस्थाओं को प्राप्त करते हैं।

सरलार्थः- उस सर्वगुणों से सम्पन्न उस निर्धन महामूर्ख पति गोविन्द को कहा कि बहुत दिनों पहले पिता के घर से आई हूँ। इसलिए वह उसके साथ ही पिता के घर जाना चाहती है। तब पत्नी के वाक्य को सुनकर उस गोविन्द ने एक बैलगाड़ी लेकर उसके पिता के घर की ओर चलना आरम्भ किया। वहाँ रास्ते में एक ब्राह्मण से मिला। वह विद्वान, रूप सम्पन्न और वीर था। उसका नाम विष्णु था। रास्ते में विष्णु के साथ उस विषकन्या का अनुराग हो गया। यहाँ श्लोक में काम की दस दशाएँ वर्णित है। जब कोई किसी के दर्शन से काम बाण के आघात को प्राप्त करता है तब उसकी ये दस दशा होती हैं। यहाँ कहते हैं कि कामदेव धनुर्धारि के मध्य में श्रेष्ठ है, क्योंकि उसके समक्ष कोई भी अपने काम को अपने वश में नहीं कर सकता और उसके पुष्पबाणों के द्वारा प्रिय दर्शनादि में अनुराग उत्पन्न होता है, दूसरी प्रिया के साथ मिलने की अभिलाषा, निद्राभंग, शारीरिक दुर्बलता, इन्द्रियों में कलुषता अर्थात् अपने-अपने व्यापारों में आलस्य, प्रिय के अतिरिक्त विषयों में मन की विरक्ति, लज्जा का अभाव, उन्मत्ता, मूर्छा और मरण ये काम की दस दशा है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अन्यदा - अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् दिने
- शकटम् - वाहनविशेषः
- वाग्मी- प्रशस्ता वाक् अस्य इति वक्ता, वाक्पटुः।

ध्यान दें:

6.2.3) द्वितीय कथा- विषकन्या की कथा-मूलपाठ-विभाग-3

स पथिको दम्पत्योः पूगपत्रोच्चयं ददाति। इत्येवं ग्राम्यब्राह्मण विष्णोर्विश्वस्तः आत्मनो निरोध संगभयादुत्तीर्य तं गन्त्रीवाहमारोहयति। विष्णुना च पत्यौ वृक्षान्तरगते सा मोहिनी भुक्ता आत्मवशीकृता। तया चात्मीयं नाम गोत्रं कुलक्रमं चाज्ञापितः। पत्युश्च समागतस्य 'त्वं चोरोऽसीति' गन्त्रारोहमं कुर्वतो निषेधः कृतः। विष्णुरपि तां गृहीत्वा गोविन्दं धर्षितवान। ततस्तयोः केशाकेशि संवृत्तम्। गोविन्दस्तु विष्णुना विषकन्याप्रभावेण निर्जितः। ततस्तां गृहीत्वा विष्णुः स्वगृहं प्रतिचलितः। गोविन्दः पृष्ठस्थो मार्गासन्ने ग्रामे गत्वा फूत्कृतवान्- 'अनेन चौरेण मम भार्या गृहीता। त्रायतां ताम्। मम शरणं भो जनाः'।

अथ ग्रामाधिपेन विष्णुर्मोहिनीयुतो धृतः। पृष्ठेनोत्तरं दत्तं विष्णुना यथेयं मया परिणीता। मदीयां च भार्यामेष पथिको मार्गे दृष्ट्वा ग्रहिलो बभूव। गोविन्देनापि पृष्टेन इदमेवोत्तरितम। ततो मन्त्री तयोरेकमेवोत्तरं श्रुत्वा जात्यादिकं पृष्टवान्। त्रयमपि तु संवदति ततः कथं निश्चयः।' इति शुक प्रश्नः।

व्याख्या- वह पथिक पति पत्नी को सुपारी पान देता। इस प्रकार उस मूर्ख ब्राह्मण ने विष्णु पर विश्वास कर लिया और मेरे विषय में कहीं पत्नी में इसका अनुराग है- ऐसा न सोचने लगे इस भय से स्वयं उतर कर उस ब्राह्मण को गाड़ी का चालक बना कर चढ़ा दिया। पति के वृक्षों की आड़ में पड़ जाने पर विष्णु ने उसका भोग किया और अपने अधीन बना लिया। मोहिनी ने अपना नाम, गोत्र और कुल उसे बता दिया। पति के आ जाने पर तुम चोर हो- यह कह कर विष्णु ने उसे गाड़ी पर चढ़ने से रोक दिया। और उसे ग्रहण कर गोविन्द पर आक्रमण कर दिया और अपमानित किया। तब दोनों परस्पर एक दूसरे के केश पकड़ कर लड़ने लगे। विषकन्या के प्रभाव से गोविन्द विष्णु से पराजित हो गया। तब विष्णु उसे लेकर अपने घर की ओर चला।

गोविन्द पीछे-पीछे चलता रहा। मार्ग के समीपवर्ती गांव में जाकर गुहार लगायी कि चोर ने मेरी पत्नी ग्रहण कर ली। उस मोहिनी की रक्षा करो। मैं तुम लोगों की शरण में आया हूँ।

तब गाँव के मुखिया ने मोहिनी समेत विष्णु को पकड़ लिया। तब पूछने पर विष्णु ने उत्तर दिया कि मैनें इससे विवाह किया है। मेरी पत्नी को मार्ग में देखकर यह पथिक ग्रहण करना चाहता है। गोविन्द ने भी पूछने पर यही उत्तर दिया। तब मन्त्री ने दोनों का एक उत्तर सुनकर जाति आदि पूछी। तीनों ठीक ठीक कहते हो तो कैसे निश्चय होगा। ऐसा शुक का प्रश्न है।

सरलार्थः- उस विष्णु ने उन दोनों को पान सुपारी दी थी। वह ग्राम्य ब्राह्मण गोविन्द उसके वचनों से विश्वस्त हुआ। वह विष्णु उस बैलगाड़ी के चालक के रूप में था। फिर जब गोविन्द अन्य वृक्ष की ओर गया तब विष्णु के द्वारा वह विषकन्या वशीकृत हुई। उसने भी अपने नाम कुलादि परिचय को उससे कहा। फिर जब गोविन्द वहाँ आया तब वह चोर है गोविन्द के प्रति विष्णु ने कहा और उसकी अवमानना की। फिर दोनों के मध्य में विवाद हुआ। किन्तु विषकन्या के प्रभाव से विष्णु जीता। फिर विष्णु ने उसे स्वीकार कर अपने घर की ओर चलना प्रारम्भ किया।

गोविन्द ने समीप के ग्राम में जाकर कहा कि चोर ने उसकी पत्नी का ग्रहण कर लिया। उसकी रक्षा करो। तब ग्राम के मुखिया ने मोहिनी समेत विष्णु को पकड़ लिया। फिर विष्णु ने कहा कि यह मेरी पत्नी है। गोविन्द ने भी यही कहा कि उसकी पत्नी को पकड़कर ले जा रहा है। तब इस समस्या के समाधान के लिए मन्त्री आया। मन्त्री ने जब जात इत्यादि पूछी तब उन्होंने सत्य कहा। फिर समाधान किस प्रकार से होगा ऐसा शुक का प्रश्न था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- दम्पत्योः - जाया च पतिश्च इति दम्पती तयोः।

ध्यान दें:

- पूगपत्रोच्चयम् - पूगम् पूगफलम् पत्रम् ताम्बूलपत्रम् तयोः उच्चयः अतिषयः तम्।
- गोविन्दम् - धर्षितवान् आक्रम्य गोविन्दस्य अवमानं कृतवान्।
- केशाकेशि- केशेषु-केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम्।
- ग्रहिलः - जिघृक्षुः।

6.2.4) द्वितीय कथा- विषकन्या की कथा-मूलपाठ-विभाग-4

ततस्तया पृष्टः शुकः आह- मन्त्रिणोक्तम्-'कियन्ति दिनानि संड्गमस्य युष्माकं प्रयाणे'। तैरुक्तम्-''कल्ये भोजनानन्तरं संवृत्तः समागमः''। ततो मन्त्रिणा ब्राह्मणौ पृथक्पृथक्पृष्टौ-'किमनया कल्ये भोजनवेलायां भुक्तम्।' यच्च तया भुक्तं तद्गोविन्दो जानाति इतरस्तु न। ततः स विडम्बितः सचिवेन। गोविन्दः शिक्षितः। धिगमां ब्राह्मणी परत्रेह च दुःखदां मुंच शीघ्रम्। उक्तंच-

वैद्यं पानरतं नटं कुपठितं मूर्खं परिव्राजकम्।
योधं कापुरुषं विटं विवयसं स्वाध्यायहीनं द्विजम्॥
राज्यं बालनरेन्द्रमन्त्रिरहितं मित्रं छलान्वेषि च।
भार्यां यौवनगर्वितां पररतां मुंचन्ति ये पण्डिताः॥6॥

तथापि कामिनीलुब्धो धिक्कृतः साधुभिस्तदा।
तामेवादाय चलितस्तत्कृते निहतः पथि॥7॥

तद्देवि यः करोत्येवमवज्ञां वृद्धशिक्षितः।
स पराभवमाप्नोति गोविन्दो ब्राह्मणो यथा॥8॥
इति कथां श्रुत्वा प्रभावती सुप्ता॥

व्याख्या- तब प्रभावती से पूछा गया शुक बोला मन्त्री ने कहा- तुम कितने दिन की यात्रा से साथ हो। आपकी यात्रा कब आरम्भ हुई। उन सभी ने कहा- प्रातः भोजन के पश्चात् साथ हुआ। फिर मन्त्री ने अलग-अलग दोनों ब्राह्मणों से पूछा- इस मोहिनी ने भोजन के समय क्या खाया। उसने जो भोजन किया वह गोविन्द ही जानता था दूसरा नहीं। तब वह दूसरा ब्राह्मण मन्त्री से तिरस्कृत हुआ। गोविन्द को शिक्षा दी कि धिक्कार है इस ब्राह्मणी पर लोक में और परलोक में दुःखदायिनी इस स्त्री का शीघ्र ही परित्याग करो। और कहा-

अन्वय- ये पण्डिताः ते पानगतं वैद्यं कुपठितम् नटं मूर्खं परिव्राजकं कापुरुषं योधं विवयसं वृद्धं विटं स्वाध्यायहीनम् द्विजं बालनरेन्द्रमन्त्रिरहितं राज्यं छलान्वेषि मित्रं यौवनगर्वितां पररतां भार्यां पत्नीं च मुंचन्ति।

अन्वयार्थः- जो पण्डितजन मद्य पीने वाले वैद्य, ठीक संवाद न कहने वाले अभिनेता, मूर्ख सन्यासी, कायर योद्धा, वृद्ध विट, वेदादि नहीं पढ़ने वाले ब्राह्मण, मंत्री रहित बाल राजा के राज्य, कपटचारी मित्र, तथा यौवनोन्मत्त एवं परपुरुष में आसक्त पत्नी का परित्याग कर देते हैं।

तात्पर्यार्थः- इस श्लोक में पण्डित किसका परित्याग करते हैं बताया गया है। और वे पण्डित- शराब पीने वाले चिकित्सक, बुरा पढ़ने वाले नट, मूर्ख सन्यासी, डरपोक योद्धा, वेश्यालय को जाता हुआ वृद्ध, स्वाध्याय से रहित ब्राह्मण, मंत्री रहित बाल राजा का राज्य, कपट व्यवहार करने वाले बन्धु, यौवन से गर्वित और अन्य पुरुष के पास जाती हुई को छोड़ देते हैं।

अन्वय- तथापि तदा कामिनीलुब्धः साधुभिः धिक्कृतः तामेव आदाय चलितः पथि तत्कृते निहतः।

पाठ-6

शुकसप्तति

ध्यान दें:

अन्वयार्थः- फिर भी सचिव के द्वारा शिक्षा दी गई उस समय कामिनी में लुभाया हुआ, सज्जनों के द्वारा धिक्कारा गया, वह उस मोहिनी को लेकर चला और रास्ते में उसी के लिए मारा गया।

तात्पर्यार्थः- कामिनी पर आसक्त गोविन्द को मन्त्री के द्वारा उपदेश दिया गया। और सज्जनों के द्वारा तिरस्कृत हुआ। फिर भी काम के वशीभूत उसे ही स्वीकार करके चला। और अन्त में रास्ते में उसका नाश हुआ।

अन्वय- तत् हे देवी वृद्धशिक्षितः यः एवम् अवज्ञां करोति सः गोविन्दः ब्राह्मणः यथा पराभवं आप्नोति।

अन्वयार्थः- इसलिए हे देवी! वृद्धों के सिखाने पर भी जो इस प्रकार उनके वचनों की अवमानना करता है, उपदेश का अनुसरण करके कार्य नहीं करता वह गोविन्द ब्राह्मण के समान ही नाश को प्राप्त करता है।

तात्पर्यार्थः- क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए गुरुजनों के द्वारा ज्ञान कराने पर भी जो नहीं सुनता है उसका, गोविन्द ब्राह्मण के समान नाश होता है।

सरलार्थः- ऐसा पूछने पर वह शुक बोला कि तब मन्त्री ने कहा- आप कितने दिन से साथ हैं तब उन्होंने कहा कि प्रातः भोजन के उपरान्त से साथ हैं। फिर मन्त्री ने गोविन्द और दूसरे ब्राह्मण से अलग-अलग पूछा- उस मोहिनी ने प्रातः क्या खाया। गोविन्द जानता था उसने प्रातः क्या खाया। उसने सत्य कहा। विष्णु ने झूठ बोला। तब मन्त्री ने उस विष्णु को दण्डित किया और उस विषकन्या का तिरस्कार किया। यहाँ श्लोक में पण्डितों किस विषय का और किस व्यक्ति का परित्याग करते हैं इस विषय में कहा गया है।

जो वैद्य मद्यपान करता है उसे पण्डित त्याग देता है। जो अभिनेता उचित प्रकार से कथनों को नहीं कहता, कुत्सित बोलने पर उसे पण्डित त्याग देते हैं। जो सन्यासी मूर्ख हो, जो योद्धा कायर हों, जो पुरुष वृद्ध हो किन्तु वेश्यालय जाता है अर्थात् जिसकी वृद्ध होने पर भी कामशान्ति नहीं हुई। जो ब्राह्मण वेद स्वाध्यायादि नहीं करता, जिस राज्य में बालक राजा हो और मन्त्री नहीं हो वैसा राज्य, जो मित्र सदैव स्वार्थ को देखता है और कपटी स्वभाव से युक्त, और जो पत्नी यौवन उन्मत्त हो अपने स्वामी की अवज्ञा कर दूसरे पुरुष के पास जाती है ऐसों का पण्डित त्याग करते हैं। इस श्लोक से यह शिक्षा प्राप्त होती है कि इनके साथ कभी भी बन्धुत्व नहीं करना चाहिए यह सुनकर प्रभावती सो गई।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- कल्ये - प्रभातसमये
- विडम्बितः - अवमानितः
- शिक्षितः - उपदिष्टः

पाठगत प्रश्न-2

17. विषकन्या के ब्राह्मणस्थान का नाम क्या है?
18. विषकन्या के पिता का नाम क्या है?
19. सोमशर्मा की कन्या का नाम क्या है?

ध्यान दें:

20. विषकन्या का पति कहाँ रहता था?
21. मोहिनी के पति का नाम क्या है?
22. दानशील का क्या दु:खदायी है?
23. मूर्ख पति किस प्रकार की पत्नी को दुखदायक है?
24. शूर ब्राह्मण का नाम क्या है?
25. विष्णु ने उन दोनों को क्या दिया?
26. कब उनका समागम हुआ?
27. .....भी हित वाक्य ग्राह्य है?
28. सोमशर्मा के वासस्थान का नाम- (ब्रह्मस्थल/जनस्थान/जनपुरम्/सोमप्रभम्)
29. गोविन्द की क्या नहीं थी-(मूर्खता/निर्बुद्धिता/विद्वत्ता/उपस्थिता बुद्धि:)
30. विषकन्या ने क्या आधार बना कर सोचा (विद्याबल/पिता की धनसम्पत्ति/दाम्भिकत्व/अपना रूपलावण्य यौवन)
31. .....पति स्त्रियों में (सुरुप/अविदग्ध/विनम्र/चतुर)

6.3) तृतीय कथा- बुद्धि की हर जगह विजय होती है

जिसकी बुद्धि उसका बल, निर्बुद्धि का कहाँ बल। अर्थात् जिसके बुद्धि है वह अत्यन्त संकट से भी अपनी रक्षा कर सकता है। इसलिए जो बुद्धिमान है वह बलवान है। जिसको बुद्धि नहीं है वह वास्तव में दुर्बल है। इस प्रसंग में शुकसप्तति ग्रन्थ में प्रभावति का पति व्यापार के लिए अन्य देश को गया। तब उसे समय व्यतीत करने के लिए शुक कथा सुनाता था। बुद्धिमती स्त्री किस प्रकार से अपनी रक्षा करती है यह बताने के लिए शुक ने कथा को सुनाया।

6.3.1) तृतीय कथा- बुद्धि सर्वत्र विजयी है-मूलपाठ-विभाग-1

हसन्नाह शुको याहि यदि कर्तुं त्वमुत्तरम्।
वेत्सि यथा श्रियादेव्या नूपुरेऽपहृते कृतम्॥1॥

अन्वय- शुक: हसन् आह नूपुरे अपहृते यथा श्रियादेव्या कृतम् तथैव त्वम् उत्तरम् कर्तुम् यदि वेत्सि तर्हि याहि।

अन्वयार्थ:- शुक ने हँस कर कहा- यदि नुपूर के अपहृत हो जाने पर परपुरुष से मिलने पर सोए हुए उसके श्वसुर के द्वारा नुपूर अपहृत होने पर श्रियादेवी ने जैसा उत्तर दिया यदि वैसा प्रतिकार करना जानती हो तो जाओ।

सरलार्थ:- वणिक जब व्यापार के लिए गया तब उसकी पत्नी प्रभावती अकेली थी। तब वसन्तकाल था। इसलिए रमण सुख प्राप्त करने के लिए उसकी इच्छा हुई। उसके शमन के लिए शुक ने कहा कि श्रियादेवी ने जैसे परपुरुष का संग करके भी अपनी बुद्धि के बल से अपनी रक्षा की वैसे यदि तुम प्रभावती भी कर सकती हो तो परपुरुष के पास जाने योग्य हो। फिर शुक ने कथा को आरम्भ किया।

ध्यान दें:

6.3.2) तृतीय कथा- बुद्धि सर्वत्र विजयी है-मूलपाठ-विभाग-2

अस्ति शालीपुरं नाम नगरम्। तत्र शालिगो वणिक्। तत्पत्नी जयिका। तयोः सुतो गुणाकरो नामाभूत्। तार्या श्रियादेवी। सा चापरेण सुबुद्धिनाम्ना वणिजा सह रमते। ततो लोकापवादेऽपि संज्ञातेऽनुरक्तस्तदीयः पतिर्न किमपि कर्णे करोति।

उक्तंच-

रक्ताः पृच्छन्ति गुणान् दोषान् पृच्छन्ति ये विरक्ताः।
मध्यस्थाः पुनः पुरुषा दोषानपि गुणानपि पृच्छन्ति॥

किंच-

महिलारक्ताः पुरुषाश्छेका अपि न सम्भरन्ति आत्मानम्।
इतरे पुनस्तरुणीनां पुरुषाः सलिलमेव हस्तगतम्॥

व्याख्या- शालिपुर नामक नगर है। वहाँ शालिग नामक वणिक रहता था। उसकी पत्नी जयिका थी। उनके गुणाकर नाम का पुत्र था। उसकी पत्नी श्रियादेवी थी। वह सुबुद्धि नामक दूसरे बनिए के साथ रमण करती थी। लोक निन्दा होने पर भी उसमें अनुरक्त उसका पति किसी भी बात को नहीं सुनता था अर्थात् विश्वास नहीं करता था।

अन्वय-रक्ताः गुणान् पृच्छन्ति विरक्ताः दोषान् पृच्छन्ति। मध्यस्थाः पुरुषाः पुनः गुणान् अपि दोषान् अपि पृच्छन्ति।

अन्वयार्थः- कहा है- अनुरक्त गण पूछते हैं उनमें गुण देखते हैं। विरक्त जन दोष पूछते हैं उनको दोष से ही प्रयोजन है। मध्यस्थ पुरुष गुण और दोष पूछते हैं उनको गुण और दोष दोनों से प्रयोजन है।

तात्पर्यार्थः- जो प्रीतिमन्त व्यक्ति हैं वे गुणों को चाहते हैं। प्रीति से रहित व्यक्ति दोष ही चाहते हैं। मध्यस्थ व्यक्ति तो दोनों चाहते हैं।

अन्वय

महिलारक्ताः छेकाः पुरुषाः अपि न आत्मानं संभरन्ति।
पुनः इतरे पुरुषाः तरुणीनां हस्तगतं सलिलमेव॥

अन्वयार्थः- स्त्रियों में अनुरक्त नागरिक निपुण होते हुए भी अपने अधिकार नहीं रख पाते। स्त्रियों के वश में रहते हैं। और अन्य पुरुष स्त्रियों के हस्तगत जल के समान नहीं होते हैं। जैसे अंजलिगत जल धीरे-धीरे बह जाता है उसी प्रकार वे स्त्रियों के हाथ में नहीं आते और स्वाधीन होते हैं।

तात्पर्यार्थः- पुरुषों में जो महिला में अनुरक्त होते हैं उनका अपने ऊपर अधिकार नहीं है। फिर दूसरे जो पुरुष होते हैं वे स्त्रियों के हाथों में नहीं रहते अपितु स्वाधीन होते हैं।

सरलार्थः- पहले शालिग्राम नाम का एक नगर था। वहाँ एक वणिक रहता था। उसका नाम शालिग था। उसकी पत्नी का नाम जयिका था। उसके पुत्र का नाम गुणाकर और पुत्रवधू श्रियादेवी थी। वह श्रियादेवी सुबुद्धि इस नाम के अन्य पुरुष में आसक्त थीं। सभी इस बात को कहते थे। परन्तु गुणाकर अपनी पत्नी से अत्यन्त प्रेम करता था। इसलिए लोक निंदा को कभी भी नहीं सुनता था। इस प्रकार विद्वान कहते हैं कि अनुरक्त गुणों को पूछते हैं, गुणों का ही ग्रहण करते हैं। विरक्त दोषों को पूछते हैं, दोषों को ही ढूंढ़ते हैं। मध्यस्थ पुरुष दोष एवं गुण सभी को पूछते हैं।

ध्यान दें:

6.3.3) तृतीय कथा- बुद्धि सर्वत्र विजयी है-मूलपाठ-विभाग-3

अन्यदा सा श्वशुरेण नरान्तरसहिता सुप्ता दृष्टा। ततश्चरणान्नूपुरं श्वशुरेण चोत्तारितं तया च ज्ञातम्। तत: सा तं जारं प्रस्थाप्य भर्तारं तत्रानीय तेन सह सुप्ता। निद्रान्तरे च पतिरुत्थापित: कथितंच-त्वदोयेन पित्रा नूपुरमस्मत्पादादवतार्य गृहीतम्। एवंविधं च पातकं क्वापि न दृष्टं यद्वधूपादात् श्वशुरो नूपुरं गृह्णाति। तेनोक्तं- प्रात: पितु: सकाशात्स्वयमर्पयिष्यामि। तेन च गुणाकरेण पितरं निर्भर्त्स्य तत्सकाशान्नूपुरं याचितम्। पित्रा चोक्तम्-यदियं परपुरुषेण सह सुप्ता दृष्टा अतो मया नुपुरं गृहीतम्।

व्याख्या- एक दिन उस श्रियादेवी को परपुरुष के साथ सोई हुई उसके ससुर ने देखा। उसके पैर से ससुर ने नुपुर उतार लिया। श्रिया देवी ने जान लिया। फिर वह उस परपुरुष को भेजकर अपने पति को लायी और उसके साथ सो गयी। निद्रा के बीच में पति को उठाया और कहा- तुम्हारे पिता ने हमारे पैर से नुपुर उतार कर रख लिया है। इस प्रकार का पाप कर्म कभी नहीं देखा कि वधु के पैर से श्वसुर नूपुर उतार लें। उसने कहा- प्रात: पिता से लेकर मैं तुम्हें स्वयं दूंगा। उस गुणाकर ने फटकार कर पिता से नूपुर को मांगा। पिता ने कहा इसे मैंने परपुरुष के साथ सोयी देख कर नुपुर लिया था।

सरलार्थ:- एक दिन वह श्रियादेवी उस सुबुद्धि पर पुरुष के साथ शयन करती है। तब उसके ससुर ने उसे देखा। उसके ससुर ने उसके पैर से नुपुर निकाल लिया अपने पुत्र को कहने के लिए। श्रियादेवी ने यह सब जान लिया। उसने सुबुद्धि को अन्यत्र भेजकर वहाँ अपने पति को लाकर शयन किया। निद्रा के बीच में उसने पति से कहा कि उसके ससुर पैर से नुपुर ले गए इस प्रकार का पाप कर्म उसने कभी नहीं देखा। तब पति ने कहा कि वह प्रात: पिता से बात करेगा। फिर दूसरे दिन प्रात: उसने पिता की भर्त्सना की उनसे नुपुर को मांगा। तब उसके पिता ने कहा कि उसने रात्रि ने उस श्रियादेवी को अन्य पुरुष के साथ शयन करते देखा। इसलिए उसके पैर से नुपुर को लिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- उत्तारितम् - गृहीतम्
- प्रस्थाप्य- सम्प्रेष्य

6.3.4) तृतीय कथा- बुद्धि सर्वत्र विजयी है-मूलपाठ-विभाग-4

तयोक्तम्-त्वत्पुत्रेण सह सुप्ताहमासम्। इत्यर्थे दिव्यं करोमि। अत्रैव ग्रामे उत्तरस्यां दिशि यक्षोऽस्ति। तस्य जंघान्तरान्निर्गमिष्यामि। य: कश्चित्सत्यो भवति स जंघयोरन्तरान्निष्क्राम्यतीति प्रसिद्धम्। एवं श्वसुरेण चांगीकृते सा कुलटा सति दिने जारस्य गृहे गत्वा तमुवाच- भो कान्त! प्रातरहं दिव्यार्थं यक्षस्य जंघान्तरान्निर्गमिष्यामि। त्वया तत्र समागत्य वातमलत्वमाश्रित्य मम कण्ठग्रहो विधेय:। तेन च तथोक्ते सा स्वगृहमाजगाम।

व्याख्या- उस श्रिया देवी ने कहा- मैं तुम्हारे पुत्र के साथ सोयी थी। इसके लिए मैं देवी शपथ ले सकती हूँ। इसी गाँव में उत्तर की ओर यक्ष है। उसके जंघा प्रदेश से बाहर निकलूंगी। जो सच्चा होता है वह उसके जांघों के बीच से निकल पाता है ऐसा प्रसिद्ध है। ऐसा करने के लिए ससुर के स्वीकार कर लेने पर वह कुलटा दिन रहते ही उपपति के घर जाकर उससे बोली- हे प्रिय! प्रात: मैं देवी शपथ के लिए यक्ष की जांघों के बीच से निकलूँगीं। तुम वहाँ आकर पागल बन कर मेरा कण्ठ पकड़ लेना। उसके द्वारा जैसा कहा वैसा करने के लिए कह कर अपने घर को आ गई।

सरलार्थ:- अपने पति से पिता के वाक्य को सुनकर उसका विरोध करके वह कहती है कि उसने गुणाकर के साथ शयन किया। उसका प्रमाण देते हुए वह यह कहती है कि उस ग्राम में एक यक्ष मन्दिर

ध्यान दें:

है। वहाँ जो सत्य कहता है वह उस यक्ष की जांघों से बाहर आ सकता है। वैसा मैं करूंगी ऐसा उसने कहा। तब ससुर ने भी स्वीकार किया। फिर उसने परपुरुष के पास जाकर कहा। कि वह प्रात: जब मन्दिर को जाएगी तब पागल बन कर उसके कण्ठ का आलिंगन करना। इस प्रकार सुबुद्धि से कहकर वह घर को आ गयी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- दिव्यम् - दैवी परीक्षा, यत: पुरा अपराधा सदोष: निर्दोषों वेति निर्णीयते स्म।
- वातूलत्वमाश्रित्य - वातूल: उन्मत्त: तस्य भावं गृहीत्वा।

6.3.5) तृतीय कथा - बुद्धि सर्वत्र विजयी है-मूलपाठ-विभाग-5

अथ प्रात: समस्तमहाजनं मेलयित्वा पुष्पाक्षतादिकमादाय यक्षायतयने गत्वा समीपसरसि स्नानं कृत्वा यक्षपूजार्थं समागच्छन्त्यास्तस्या: पूर्वसंकेतितो जारो ग्रहिलीभूतस्तत्कण्ठे निजबाहुद्वयं योजयामास। तत आ: किमेतदित्यभिधाय सा पुन: स्नानार्थं ययौ। सोऽपि ग्रहिलो लोकै: कण्ठे गृहीत्वा तस्मात्प्रदेषाद्दूरीकृत:। सापि स्नानं कृत्वा यक्षसमीपमागत्य पुष्पगन्धाद्यैरभ्यर्च्य सर्वलोकानां श्रृण्वतामुवाच-भो भगवन्यक्ष! निजभर्तारमेनं च ग्रहिलं विना यद्यन्यपुरुष: स्पृषति कदाचन मां तदा तव जंघाभ्यां सकाशान्मम निष्क्रमणं मा भवत्वित्यभिधाय सर्वलोकसमक्षमेव जंघयोर्मध्ये प्रविष्य निष्क्रानता। यक्षोऽपि तद्बुद्धिं मनसि ष्लाघमान एव स्थित:। सापि सतोति समसतलोकै: पूजिता स्वभवनं जगाम। एवं चेत् श्रियादेवीवत्कर्तुं जानासि तदा व्रज। इति श्रुत्वा प्रभावती सुप्ता।

व्याख्या- इसके बाद प्रात: सभी श्रेष्ठजनों को एकत्र कर पुष्पाक्षत आदि लेकर यक्ष के मन्दिर में जाकर समीपवर्ती सरोवर में स्नान कर यक्ष पूजा के लिए आती हुई उसके कण्ठ में, पूर्व से ही संकेत किए गए, पागल बने हुए उसके उपपति ने अपनी दोनों भुजाएँ डाल दी। तब ओह यह क्या- ऐसा कहकर पुन: स्नान के लिए चली गई। उस पागल बने व्यक्ति को लोगों ने गला पकड़ कर उस स्थान से दूर किया। वह श्रिया देवी भी स्नान कर यक्ष के पास आकर पुष्प गन्धादि से सम्यक् पूजन कर सब लोगों को सुना कर कहा- हे भगवन यक्ष मेरे पति तथा इस पागल के अतिरिक्त यदि और किसी पुरुष ने कभी मेरा स्पर्श किया हो तो तुम्हारी जांघों से मेरा निष्क्रमण न हो सके- ऐसा कहकर सब लोगों के सामने ही जांघों के मध्य में प्रवेश कर निकल गई। यक्ष भी मन में उसकी बुद्धि की प्रशंसा करता हुआ स्थित रहा। वह भी सती मानी गयी, लोगों से सम्मानित हो अपने घर गयी। इस प्रकार यदि श्रिया देवी की भांति करना जानती हो तो जाओ। यह कथा सुनकर प्रभावती सो गई।

सरलार्थ:- दूसरे दिन प्रात: सभी को एकत्रित करके पुष्पादि लेकर यक्ष के मन्दिर को गई। वहाँ समीप में स्थित सरोवर में स्नान करके यक्ष के पूजन के लिए जब मन्दिर की ओर जाती है तब वह परपुरुष सुबुद्धि पागल बनकर उसके कण्ठ का आलिंगन करता है तब यह क्या कहकर वह पुन: स्नान को गयी। स्नान करके मन्दिर में प्रवेश कर यक्ष देवता की पूजा करी। फिर सबको सुनाते हुए उच्च स्वर में कहा कि उसके पति एवं इस पागल के अतिरिक्त यदि किसी पुरुष ने मुझे स्पर्श किया हो तो मैं जंघा से न निकल सकूँ। फिर वह सभी के सामने यक्ष की जंघा के नीचे से बाहर आ गई। यक्ष ने उसकी बुद्धि जानकर उसकी मन में स्तुति की। वह श्रियादेवी भी सती होकर सभी के द्वारा प्रशंसित हुई। इस प्रकार यदि अपनी रक्षा में समर्थ हो तो जाओ। कथा सुनकर प्रभावती सो गई।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- ग्रहिलीभूत: - भूताविष्ट:, आत्मानम् उन्मत्तम् प्रदर्शयन्निव तस्या जार: इत्यर्थ:।

- सर्वलोकानां - श्रृण्वताम्- सर्वान् जनान् श्रावयित्वा इत्यर्थः।
- श्लाघमानः - प्रशंसां कुर्वन्।

पाठगत प्रश्न-3

32. नगर का नाम क्या है?
33. वहाँ स्थित बनिए का नाम क्या है?
34. शालिग की पत्नी का नाम क्या है?
35. शालिग के पुत्र का नाम क्या है?
36. गुणाकर की पत्नी का नाम क्या है?
37. वह किस पुरुष के साथ रमण करती है?
38. कौन केवल गुणों का ही ग्रहण करते है?
39. गुण दोषों को भी कौन ग्रहण करता है?
40. ससुर ने श्रिया देवी के पास से क्या लिया?
41. सत्य के लिए कौन प्रमाणिक है?

पाठ सार

इस पाठ में शुकसप्तति ग्रन्थ से तीन कथाएं ली गई है। प्रथम कथा का नाम सुदर्शन की बुद्धि था। उस पाठ में राजा सुदर्शन की विचार क्षमता के विषय में ज्ञात होता है। विमल नामक एक वणिक् था। उसकी दो पत्नी थी। उस ग्राम में एक मूर्ख था। उसने उसकी पत्नी को प्राप्त करने के लिए देवी अम्बिका की उपासना करके विमल के समान रूप को प्राप्त किया। फिर जब विमल घर से बाहर गया तब वह उसके घर को गया। वह सभी को धनादि देता था। उससे सभी प्रसन्न हुए। फिर जब वास्तविक विमल आया, तब सभी ने उसे अन्य बताया। तब वह राजा के पास गया। राजा ने उसकी दोनों पत्नियों रुक्मिणी और सुन्दरी से पूछा कि उनके पति ने विवाह के समय उन्हें क्या दिया और क्या बातचीत की। वास्तविक विमल ने सभी सच कहा। तब राजा ने उसे सपत्नी आदर से घर को भेजा। अन्य धूर्त को दण्डित किया।

द्वितीय कथा में गुरुजनों के उपदेश को सदैव सुनना चाहिए इस विषय में शुक ने कहा। गोविन्द नामक ब्राह्मण था। उसने गुरुजनों और मित्रजनों का निषेध कर उल्लंघन कर मोहिनी नामक विषकन्या के साथ विवाह किया। एक दिन जब वह पति के साथ पिता के घर को जाती है तब मार्ग में विष्णु नामक एक ब्राह्मण ने उनके साथ चलना आरम्भ किया। वह मोहिनी उस विष्णु पर अनुरक्त हो गयी। उस विष्णु ने गोविन्द को उतार कर उसे अपने साथ लेकर अपने घर की ओर जाने लगा। गोविन्द ने ग्राम के मुखिया से कहा। उसने विष्णु और मोहिनी को पकड़ा। तब मन्त्री ने आकर समाधान के लिए गोविन्द को पूछा कि मोहिनी ने प्रातः क्या खाया। विष्णु भोजन के पश्चात् आया इसलिए वह उचित रूप से नहीं जानता था। मन्त्री ने उसके लिए दण्ड की उद्घोषणा की। और गोविन्द को मोहिनी का परित्याग करने के लिए कहा। क्योंकि वह स्त्री अपने पति का त्याग कर अन्य किसी के भी साथ उसके घर जाती है

ध्यान दें:

ध्यान दें:

वह पतिव्रता नहीं है। इसलिए उसका परित्याग करने का उपदेश दिया।

तृतीय कथा में शुक ने कहा कि शालिपुर नामक नगर में गुणाकर नामक वणिक् था। उसकी पत्नी श्रिया देवी थी। वह सुबुद्धि नामक अन्य पुरुष में अनुरक्त था। एक दिन सुबुद्धि के साथ सोते समय उसके ससुर ने उसे देखा। उसने छल से उसके पति से कहा कि ससुर ने झूठ देखा। दूसरे दिन जब सभी के ने विश्वास नहीं किया था, तब उसने कहा ग्राम में यक्ष मन्दिर है, वहाँ यक्ष की जाघों के मध्य से आऊँगी। जो आ सकी तो सत्यवादी है ऐसी प्रसिद्धि थी। फिर उसने सुबुद्धि से कहा कल मन्दिर जाने से पहले पागल बन का उसका कण्ठ से आलिंगन करना। प्रात: जब वह स्नान करके जाती है तब वह वैसे ही उसके कण्ठ का आलिंगन करता है। फिर वह पुन: स्नान करके यक्ष को कहती है कि यदि उसके पति और इस पागल के अतिरिक्त किसी भी पुरुष ने स्पर्श किया हो तो मैं बाहर नहीं आ सकूँ। वह बाहर आ गयी, यक्ष ने भी उसके वचन को सुनकर प्रशंसा की।

आपने क्या सीखा

1. राजा सुदर्शन की विचार क्षमता।
2. बालकों से हित वाक्य ग्रहणीय है।
3. बुद्धि बल से अपनी रक्षा करनी चाहिए।

योग्यता विस्तार

ग्रन्थ विस्तार

कथा का बोध और आनन्द समान ही सिद्ध होता है। इसलिए इस पाठ में जो कथा दी गई है इस प्रकार की कथा का अधिक अध्ययन करना चाहिए। यहाँ कथा की विस्तृत व्याख्या को पढ़कर यदि पाठक अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहते है तो-

1. पण्डित रमाकान्त त्रिपाठी की व्याख्यायित शुकसप्तति पुस्तक को पढ़ें।
2. आचार्य गुरुप्रसाद शास्त्री द्वारा रचित पंचतन्त्र की अभिनव राजलक्ष्मी नाम की संस्कृत टीका को पढ़ें।

भाव विस्तार

1. यहाँ जो कथा हैं उनके आप नाटक कर सकते हैं।
2. छात्रों को सरलता से उपदेश के अवसर पर ये कथा सुना सकते हैं।
3. यहाँ सुदर्शन राजा और मन्त्री के चरित्र का अवलोकन करना चाहिए।
4. उपस्थित बुद्धि बल के द्वारा कैसे रक्षा होती है यह जान सकते है।

भाषा विस्तार

1. यहाँ जो समास है उनकी तालिका बनाएँ।
2. यहाँ दिए गए कठिन पदों की अर्थ सहित तालिका बनाएँ।
3. जो नवीन शब्द ज्ञात हुए उनका लेखन के समय प्रयोग कीजिए।

ध्यान दें:

पाठगत प्रश्न

1. धूर्त ने किस प्रकार से सभी को अपने वश में कर लिया?
2. राजा ने क्या उपाय का अवलम्बन कर समाधान किया?
3. सुदर्शन की बुद्धि कथा का सार लिखो?
4. तीनों क्या दुख:दायक है व्याख्या कीजिए।
5. जीवन में क्या दु:ख देता है?
6. काम की दस दशाओं को वर्णन कीजिए?
7. पण्डित किन का परित्याग करते हैं?
8. कैसे दम्पत्ती के साथ विष्णु का मिलन हुआ और कहाँ से उनके साथ विवाद हुआ?
9. मन्त्री ने कैसे उनका समाधान किया?
10. विषकन्या कथा का सार बताओ?
11. कौन किन विषयों को ग्रहण करता है, श्लोक कहकर वर्णित कीजिए।
12. श्रियादेवी ने कैसे अपनी रक्षा की?
13. यक्ष देवता ने कहाँ मन से उसकी बुद्धि की प्रशंसा की?
14. बुद्धि सर्वत्र विजयी होती है इस सूक्ति को उदाहरण के साथ प्रतिपादित कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. अनिरूद्ध वेगी
2. प्रभावती के
3. विशाला
4. सुदर्शन
5. विमल
6. रूक्मिणी और सुन्दरी
7. कुटिल
8. देवी अम्बिका
9. प्रजापीड़न के सन्ताप से उत्पन्न
10. स्वर्ग प्राप्ति के निमित्त
11. विशाला
12. रूक्मिणी और सुन्दरी

ध्यान दें:

13. कुटिल
14. बहुत मान दान आदि से
15. प्रजापीड़न के सन्ताप से
16. स्वर्ग प्राप्ति के

उत्तर-2

17. सोमप्रभ
18. विषकन्या के पिता का नाम सोमशर्मा
19. मोहिनी
20. जनस्थान में
21. गोविन्द
22. कम धन
23. कामकला में निपुण पत्नी
24. विष्णु
25. सुपारी दी
26. प्रातः भोजन के बाद
27. बालक से भी
28. सोमप्रभ
29. विद्वता
30. अपना रूप लावण्य यौवन
31. अविदग्ध

उत्तर-3

32. शालिपुर
33. शालिग
34. जयिका
35. गुणाकर
36. श्रियादेवी
37. सुबुद्धि के
38. अनुरक्त
39. मध्यस्थ
40. श्रिया देवी के नुपुर
41. यक्ष